Yayawari
via bhojpuri

NotNul

बड़की दीदी का यक्ष प्रश्न

दयानंद पांडेय

अनुवाद
सुधीर कुमार मिश्रा

आवाज
प्रतिमा योगी

बड़की दीदी का यक्ष प्रश्न

कहानी

लेखक- दयानन्द पाण्डेय

अनुवादक- सुधीर कुमार मिश्र

ईश्वर बृज'' फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

बस अभियो हिचकोला खात रहे तले अन्नु के आवाज़ हमरा कान में पड़ल ,उ हमरा के अपना सीट प बोलावत रहे। हम अपना सीट से उठले रहीं की बस एगो स्पीड ब्रेकर से भड़भड़ा के गुजरत रहे आ हम गिरला-भहराइला से बाँचत,अन्नू के सीट प जाके बईठनी तले अन्नू बोललस की, 'हियरिंग एड लगा ल'। हम उनके बतावनी की 'हम लगा ले ले बानी'। त उ बोलले 'बड़की फुआ से मिलबु?' एहि बीचे बस कवनो ट्रक के ओभर टेक करत रहे ओकर तेज़ सिटी के बीचे अन्नू के आवाज एकदम से दबा गइल रहे। उ फिर से कहले, 'बड़की फुआ से मिलबु?' उ आपन मुँह हमरा कान के एकदम जरी लिया के अउरी जोर से कहले, 'उनकर गाँव बस आवहीं वाला बा'।

हम आपन मुड़ी उनका सहमति में हिला दिहनी।

बड़की दिदिया हमनी दस भाई बहिन के बीच में दूसरा नम्बर प रहली अउरी सात गो बहिन लोग में से सबसे बड़। भाई-बहिन में सबसे छोट हमहिं रहनी। हम पचास साल के रहनी आ बड़की दिदिया होइहैं उहे लमसम पचहतर साल के।

घर मे उ बड़की रहली आ हम छोटकी। एह तरे हमनी दुनो लोग के उमिर के बीचे लमसम 25 बरिस के अंतर रहे। लेकिन लिखतन्त देखीं की हमरा पैदा भइला से पहिलहीं दिदिया 'बिधवो' हो गायिल रहली।